14.44 hrs.

Title: Further discussion on atrocities on linguistic and religious minorities in the country raised by Shri Moinul Hassan on 17 August, 2000. (Concluded)

MR. DEPUTY-SPEAKER: At the outset, let me appeal to you that since we do not have much time, there should not be any interruptions. If you want to seek any clarification, I will allow you later.

Now, is it the sense of the House to take ten to fifteen minutes minimum from the Private Members" time to accommodate the reply of the hon. Minister?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

SHRI SONTOSH MOHAN DEV (SILCHAR): Sir, please extend the time till the hon. Minister completes his speech.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The Private Members" time will be accordingly further extended after 5.30 p.m.

गृह मंत्री (श्री लाल कृण आड्वाणी) : उपाध्यक्ष जी, मोइनुल ह्सन जी का मैं ब्हुत आ्भारी हूं कि उन्होंने इस ब्हस को करने का ्सदन को ्यह अ्वसर दि्या है। मैं मानता हूं कि ब्हस अच्छी हुई। दोनों तरफ ्से जो दृ्टिकोण रखना था, ्वह कई प्रमुख ्सद्स्यों ने ब्हुत प्रभा्वी ्रूप ्से रखा। ्संतो्ा मोहन दे्व जी ्यहां ब्ैठे हैं, ्शा्यद ्वह उन कम लोगों में ्से थे जिन्होंने भा्ाई अल्प्संख्यकों की ब्ात की।

अधिकां्श चर्चा धार्मिक अल्प्संख्यकों की थी। लेकिन जिन कुछ ्सद्स्यों ने इस भा्ायी अल्प्संख्यकों के ब्ारे में भी ब्हुत प्रभा्वी ्रूप ्से अपनी ब्ात रखने की को्शि्श की, उनमें श्री ्संतो्ा मोहन दे्व, श्रीमती माग्रेट आल्वा और श्री पूर्णो ्संगमा जी थे। इन्होंने ब्हुत ही तीखे ्रूप में दे्श में ईसाइ्यों के अ्सुरक्षा भा्व को प्रकट कि्या। उ्सी प्रकार ्से उन्होंने आरोप जितने लगाए, उनका काफी प्रभा्वी उत्तर ्यहां वि्ज्य कुमार मल्होत्रा जी, ्सुश्री उमा भारती जी ने दि्या और जिनको मैं पहली ब्ार ्सुन रहा था, इस ्सदन के नामांकित एंग्लो-इंड्ियन ्सद्स्य, जिनको मैंने पहले क्भी नहीं ्सुना था, श्री डेन्जिल एटकिन्सन । जि्सको अच्छी चर्चा कह ्सकते हैं, व्ैसी चर्चा कल हुई, ्वाद-प्रति्वाद, कोई तर्क देना, तो उ्सको काटना । मुझे ्स्वयं को लगता है कि अ्ब इसकी ज्रूरत नहीं है। मैं लोगों की आलोचना का प्रति्वाद करता रहा हूं, उत्तर देता रहा हूं। उ्सके ब्जाए मैं कल की ब्हस में ्से शि्क्षा ग्रहण करने की को्शि्श क्रूंगा। मुझे ्स्वयं को लगता है, खा्सकर करके, पूर्णो ्संगमा जी ्सदन में उपस्थित नहीं है, श्री ्संगमा जी ज्ब अध्यक्ष थे, मैं त्ब भी उनका आदर करता था और आज भी आदर करता हूं, ब्ल्कि एक प्रकार ्से मेरा आदर उनके प्रति और ब्ढ़ ग्या है। मैंने ज्ब देखा कि जिनके ्साथ उनका जी्वन भर ्संबंध रहा, जि्स पार्टी के ्साथ, उ्स पार्टी ्से ्संबंध वि्च्छेद कि्ए। इस कारण नहीं कि उनको कोई पद नहीं मिल रहा था, उनको ्वहां पर कोई ्योग्य ्सम्मान नहीं मिल रहा था, लेकिन ्वे एक ्सिद्धान्त मानते थे और जि्स ्सिद्धान्त को ज्ब पार्टी ने नहीं माना, तो उन्होंने कहा कि मैं पार्टी में नहीं रह ्सकता हूं। इसीलिए मैं ्स्वयं मानता हूं कि कल की चर्चा, य्द्यपि, ्वह ईसाइ्यों के ब्ारे में नहीं थी, ्वह प्रमुख ्रूप ्से कुल मिलाकर धार्मिक अल्प्संख्यक, उनके पर अ्त्याचार के ब्ारे में थी। लेकिन चर्चा का ्सारा केन्द्र बिन्दु बन ग्या ईसाइ्यों के प्रति दे्श में व््यवहार और ्सरकार का उनके प्रति र्वै्या। पूर्णो ्संगमा जी कहते हैं, ्सही हो ्या गलत, लेकिन इस ब्ात को ्स्वीकार करना होगा कि Justice must not only be done, but seem to be done. इ्सीलिए आज ्सर्व्सामान्य ईसाई के मन में अ्सुरक्षा भा्व का निर्माण हुआ है कि मैं इस दे्श में अ्सुरक्षित हूं। ज्ब ्वे कहते हैं, तो मैं उ्से ्स्वीकार करके अपनी ्सरकार के लिए एक टा्सक मानता हूं कि मेरी ्सरकार का काम है कि इस अ्सुरक्षा के भा्व को निकालो। मैं उ्सका कोई उत्तर देने की को्शि्श नहीं कर रहा हूं, उत्तर तो ब्हुत ्सारे मेरे ्साथि्यों ने दे दि्या है, ्वाद-प्रति्वाद के चलते।

महोद्य, मैं अपनी ब्ात इस ब्ात ्से आरम्भ क्रूंगा कि आज ्से ढ़ाई ्साले पहले ज्ब हमारी ्सरकार बनी, त्ब हम लोगों के लिए, जो व्ाों ्से जन्संघ में थे, ब्ाद में भारती्य जनता पार्टी के ्रूप में काम करते रहे, एक न्या अनुभा्व था। पचा्स ्साल तक हम प्रा्यः वि्पक्ष में रहे। थो्ड़े ्सम्य के लिए ज्ब जनता पार्टी की ्सरकार बनी थी, मोरारजी भा्ई की, त्ब ्सरकार के हि्स्से हुए। लेकिन ्वह कोई हमारी ्सरकार व्ैसी नहीं थी, ज्ैसी य्ह ्सरकार है। हमारे लिए ्सरकार में आना, It was with a great handicap. We started with a handicap. मैं क्ेवल इस ब्ात की चर्चा नहीं करता हूं कि हमको ्स्पट बहुमत नहीं था। शा्यद हम्से पहले की जो दो ्सरकारें हुईं, उनको न्युमैरिकल हैंडिकैप हम्से ज््यादा था। लेकिन जि्स प्रकार का हैडिकैप हमारी ्सरकार को रहा है, व्ैसा हैंडिकैप कि्सी पहले की ्सरकार को नहीं रहा है।

इस नाते ्यह ्सब्से ब्ड़ा हैंडीकेप्ड है। You start with a certain image. इमेज़ और रिएलिटी में ब्हुत अंतर है। मैं उ्से कह ्सकता हूं, It is a distorted image. मेरे वि्पक्ष के लोग नहीं मानेंगे, मैं उ्से प्रमाणित कर ्सकता हूं। It is a distorted image, a totally distorted image.

हमारी पार्टी और ्सरकार की इमेज़ ्यह है कि ्यह ्सरकार ्सेक्युलरिज़्म के खिलाफ है। ्यह ्साम्प्रदा्यिक ्सरकार है। ्यह ऐ्सी ्सरकार है, जि्समें मु्सलमान अ्सुरक्षित रहेंगे। व्ाों का एक इमेज़ ब्नाने में ्सम्य लगता है। मैं पिछले दिनों रफीक़ ज़काऱि्या की एक पु्स्तक पढ़ रहा था, जो मुंब्ई के हैं और कांग्रे्स के प्रमुख नेता रहे हैं। उनकी पु्स्तक ्सरदार पटेल के ब्ारे में है, जि्समें उन्होंने इस ब्ात का

जि्क्र कि्या है :-

> "On the Sardar's passing away on December 15, 1950, All India Radio which was then the only mass media of its type, Doordarshan took two decades more to make its appearance, decided to institute the Sardar Patel Memorial Lectures in memory of the first Minister of Information and Broadcasting. This memorial lecture was inaugurated by Rajagopalachari better known as Rajaji. In 1996, when All India Radio approached me (meaning Rafiq Zaqaria) to deliver these memorial lectures. I chose the subject "Sardar Patel and Indian Muslims."

He goes on to say:

> "The subject I chose was rather controversial. At first I was somewhat apprehensive about it. I had, both as a student of and as a participant in Indian politics, enough knowledge about the life and times of Sardar Patel and his monumental achievements in different spheres. But like many of my co-religionists, I

too was under the impression that he (meaning Sardar) did not like Muslims. In fact I thought he was unabashedly anti-Muslim. But the more I researched, the more I was convinced that the Iron Man had been misunderstood in many respects and there were cobwebs about his attitude towards Indian Muslims which needed to be removed. I am glad I was able to do so to my satisfaction."

This is the result. He comprised the series of lectures that he had delivered plus something more into a book with the title "Sardar Patel and Indian Muslims".

The introduction has been written by Nani Palkhivala. It says:

"The Sardar's fanatical devotion to the unity and integrity of India and to Hindu-Muslim brotherhood was exemplary. His patriotism was beyond doubt and his nationalism was equally beyond dispute. Yet, the pseudo-secularists openly accused this person of communalism and pro-Hindu bias. Even some of his own colleagues like Maulana Abul Kalam Azad and Jayaprakash Narayan did so. Nonetheless, they both had the large-heartedness later to confess to their wrong judgement. "

Rajaji also has been quoted in this book saying:

"A myth had grown about Patel that he would be harsh towards Muslims. This was wrong but it was a prevailing prejudice. "

I am saying that this is the kind of handicap with which this Government started.

SHRI ADHIR CHOWDHARY (BERHAMPORE, WEST BENGAL): Are you equating yourself with Sardar Patel?

SHRI L.K. ADVANI: No, I am talking of this Government. I am not talking of any individual. I have all along been very particular about it.

मेरे संदर्भ में जब सरदार पटेल की बात की जाती है तो मैं विचलित फील करता हूं क्योंकि वे बहुत महान आदमी थे।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : आपने हमें भी तो हिंदू विरोधी बना दिया है। अब धीरे-धीरे वह बात खत्म हो रही है। आप हमारी तरह ही चलें।

श्री लाल कृण आड्वाणी : आपको मौका मिले तो आप शिकायत कीजिए, उसमें कोई दिक्कत नहीं है। 16 दिसम्बर 1998 में भी इसी प्रकार की चर्चा इस सदन में हुई थी और उस समय ईसाइयों का जिक्र था लेकिन मुख्य रूप से तो वही बात थी कि मुसलमानों के ऊपर अत्याचार हो रहे हैं। उस समय श्री मुख्तार अब्बास नकवी हमारे मंत्रिमंडल के साथी थे। उन्होंने कहा कि मैं पहले भी इस प्रकार की बहस में भाग लेता रहा हूं। मैं स्वयं तो राज्य सभा में 1970 में आया था। उस समय से लेकर आज तक साम्प्रदायिक दंगों और साम्प्रदायिक तनावों की चर्चा न हुई हो ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि पहले की जितनी बहस हुआ करती थीं तो विपक्ष के लोग या उन्हीं की अपनी पार्टी के लोग लाशें गिनवाते थे कि कितने हिंदू मरे, कितने मुसलमान मरे। लेकिन यह पहली बहस है जिसमें किसी ने दंगों की चर्चा नहीं की है, कितने लोग दंगों में मारे गये, इसकी चर्चा नहीं की है। हां, चर्चा हुई है तो यह कहा है कि फलां व्यक्ति ने यह कहा या यह वक्तव्य दिया। जैसे कल मेरा नाम लेकर माननीय मार्ग्रेट आल्वा जी ने कह दिया कि हेट-कैम्पेन में ये भी शामिल हो जाते हैं। मुझे यह अच्छी तरह से याद है, आपने मेरा नाम उस संदर्भ में लिया, जब हेट-कैम्पेन की बात आप कर रही थीं।

SHRIMATI MARGARET ALVA (CANARA): I spoke about a pamphlet on the Constitution. I never said that you were part of the high hate campaign. But if that is the impression you have got, I am sorry. But I did not mean that. I apologise .

SHRI L.K. ADVANI: I accept what you say, because I have never written any pamphlet after the formation of the Commission. But earlier, I had delivered so many speeches on the Constitution and what should be done about it.

SHRI MADHAVRAO SCINDIA (GUNA): I would like to ask you one simple question. I would not like to interrupt otherwise.

Is it a fact or is it not a fact that you, Mr. Home Minister, were present at the site when the criminal destruction of the Babri Masjid was taking place? If this is true, your statement is lacking credibility.

श्री लाल कृण आड्वाणी : माननीय माधवराव जी हमारे मित्र हैं, हमारे साथी रहे हैं। मैं वहां था, इसमें मुझे इंकार करने की कोई बात नहीं लगती। लेकिन उस समय की मेरी जो दशा थी, उसका वर्णन मैंने दस दिन के बाद जब मैं कारावास में था, अपने एक आर्टिकल में किया कि मेरे जीवन का अगर कोई सबसे दुःखद दिन था तो वह दिन था। ठीक है, उन्होंने अपनी बात कही। उनको जानकारी है कि मैं वहां था। जानकारी न होने के कारण दुनिया भर के निर्का निकाले जाते। यह बात मैं आज नहीं कह रहा हूं। अगर कोई उस महीने की 20-25 तारीख के इंडियन एक्सप्रेस को आज भी पढ़ेगा तो मेरा आर्टिकल उसको मिलेगा। मैं उस बात में नहीं जाना चाहता क्योंकि मामला कोर्ट में है और कोर्ट जो फैसला देगा वह मुझे स्वीकार होगा। मैं कह रहा था कि जिस प्रकार से गलतफहमियों के आधार पर छवियां बनती हैं और उस व्यक्ति के बारे में भी बनती हो जिसने देश को एक बनाया। सन 1959 में मई महीने में राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था "that there is today's India to think and talk about".

15.00 hrs.

ऐसे व्यक्ति के बारे में भी ऐसी धारणाएं हैं कि वह मुस्लिम विरोधी थे. वह सैकुलरिज्म को नहीं मानते थे। ...(*Interruptions*) Sir, I am not yielding. ...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Brar, he is not yielding. Please take your seat.

...(*Interruptions*)

श्री लाल कृण आड्वाणीः मैंने 1998 की उस बहस की चर्चा की। मैंने मुख्तार अब्बास नक्वी की ब्यान की चर्चा इसलिए की, यदि मैं आंक्ड़ों में जाऊंगा तो इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे पास 1990 से लेकर 2000 तक के आंक्ड़ों का पूरा चार्ट है कि कितने दंगे हुए, कितनी घटनाएं हुई, कितने लोग मारे गए, कितने लोग घायल हुए? 1998-99 और 2000 वे साल हैं, जिस दौरान साम्प्रदायिक दंगे कम से कम हुए, हत्याएं कम से कम हुई, घटनाएं कम से कम हुई। अलबत्ता मैं इस बात को इन्कार नहीं करूंगा जैसा संगमा जी ने कहा कि ईसाइयों के संदर्भ में घटनाएं बढ़ी हैं। मैं यह भी नहीं कहूंगा कि थोड़ी बढ़ी हैं, कम बढ़ी हैं लेकिन बढ़ी है। यह गलत बात है। यह नहीं होना चाहिए। जो बात संगमा जी ने कही, मैंने 28 जून को लगभग उन्हीं शब्दों में कही। मैं 25 मई को किसी कार्यक्रम के लिए हैदराबाद गया था। उसके चार दिन पहले मछलीपट्टनम में डिस्ट्रिक्ट कृणा में ईसाइयों की एक गैदरिंग थी। वह चैप्पल में थी, कैथेडरल में थी या चर्च में थी लेकिन बम विस्फोट हुआ। उसमें कुछ लोग घायल हुए लेकिन किसी की मृत्यु नहीं हुई। मुझे देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये सब क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है? मैंने पुलिस अधिकारियों से बात की और कहा कि वहां क्या बैकग्राउंड है? उन्होंने कहा कि यहां कभी ईसाइयों और हिन्दुओं के बीच कोई तनाव नहीं रहा। मैंने पूछा कि क्या अन्दाजा है, किसी को पक्ड़ा या नहीं? उन्होंने कहा कि पक्ड़ नहीं पाए, हमें कुछ अन्दाजा है लेकिन उसे आज नहीं कह सकते। उसके थोड़े दिन बाद हम देखते हैं कि लगातार एक के बाद एक घटनाएं हुईं। Between the 21st of May and the beginning of July, perhaps there had been 12 bomb blasts, spread over Karnataka, Andhra Pradesh and Goa. 12 बम विस्फोट होते हैं और कुछ लोग घायल होते हैं। 28 जून को इंटरनल सिक्योरिटी के इशू को डिसक्स करने के लिए डायरैक्टर जनरल ऑफ पुलिस की एक कॉन्फ्रेंस हुई जिस में चीफ सैक्रेट्रीज भी आए थे। वहां इस बात का जिक्र हुआ। After all, we have huge machinery; and here is a

---

*Not Recorded.

situation in which one after the other, bomb blasts are taking place. I said, "If you are able to trace the people who belong to any organisation which is supposed to be associated with mine, do not worry about it." हमें पकड़ना चाहिए। Let us take these people. उन्हें खोज निकालें। पॉलिटिकल एफिलिएशन या रिलीजियस एफिलिएशन की चिन्ता किए बगैर आप उनको खोज निकालें, जो लोग ये सब काम कर रहे हैं, मुझे उसका डिजाइन दिखाई देता है। एक दिन सुबह मेरे पास कर्नाटक के मुख्यमंत्री का टेलीफोन आता है कि इस प्रकार की घटना एक चर्च में हुई है। हमारे यहां से लोगों को जो जानकारी है उसके आधार पर उन्होंने उसे फॉलो-अप किया और कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा सैट्रल एजेंसियों ने मिल कर इतने बड़े रहस्य का, ड्यंत्र का भंडाफोड़ किया। यदि ऐसा भंडाफोड़ किसी और देश में होता, इस बारे में मोइनुल हसन साहब ने सही कहा कि ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि देश के प्रधान मंत्री को रोम में वैटिकन में पोप से मिल कर कहना पड़ा कि ये बातें हो रही हैं।

"They are sporadic things; they are not in any way should be regarded as organised, but they are wrong. The Government is keen to see that they are stopped." एक पखवाड़े के अन्दर जब देश को इस प्रकार की जानकारी मिली कि बाकायदा कोई संस्था है -

जिसका नाम दीनदार अंजुमन है। मैंने इस दीनदार अंजुमन के बारे में पहले कभी नहीं सुना था। मैंने पिछले दिनों डा. के.एम. मुंशी की एक पुस्तक देखी है। It is about Hyderabad's integration with the rest of the country. Even in that Deendar Anjuman attracted one and half pages.

शायद उस समय यह एक संस्था थी । उस दीनदार अंजुमन संस्था के 35 लोग अब तक गिरफ्तार हो चुके हैं और शायद 60 लोगों को आइडेंटिफाई किया जा चुका है। वे लोग कौन-कौन से काम करते रहते हैं, इसके बारे में यहां चर्चा होती है लेकिन मारग्रेट जी ईसाई की घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं करती।

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण मध्य): शेम शेम ।

श्री लाल कृण आड्वाणीः रावले जी इसमें शेम की कोई बात नहीं है। इस बात में किसी के लिये पाइंट स्कोर करने की कोई बात नहीं क्योंकि समस्या हल नहीं होगी। उस समस्या को कोई सरकार निपटा नहींसकती। जब तक सरकार को विपक्ष का सहयोग नहीं मिलेगा, जब तक देश का सहयोग नहीं मिलेगा,तब तक हम पाकिस्तान के सारे ड्यंत्रों का मुकाबला नहीं कर सकते और इसी लिये हम लोग बहस करेंगे।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): We have given total support to the Government on the question of conspiracy of Pakistan through the ISI. Do not say that as long as you are getting our cooperation. We stand committed to cooperate with the Government to maintain the unity and integrity of the country and to maintain the communal harmony of the nation.

श्री मोहन रावले : जिन्होंने हमला किया है, वे आई.एस.आई. के लोग हैं और वे एक्सपोज़ हुये हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is acknowledging it.

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : श्रवले जी, मैंने उन्हें रिक्वैस्ट किया है, आप क्यों बोल रहे हैं? हमारी पार्टी हमेशा देश हित में रही है लेकिन सरकार ने स्थिति को सही बनाये रखने में सहयोग नहीं किया।

श्री मुलायम सिंह यादव : लोग तो बाहर जाकर हमे मौलाना मुलायम सिंह कहते हैं। गृह मंत्री जी यह बात सच है।

श्री जी.एम. बनातवाला (पोन्नानी): हमने कहा है कि आप आई.एस.आई. के खिलाफ पूरी कार्यवाही करें। जहां तक दीनदार अंजुमन का ताल्लुक है, मुसलमान तो उसे मुसलमान भी नहीं समझते हैं बल्कि वे अलग ख्याल के हैं, अलग अकायद के लोग हैं। उन्हें ख्वामख्वाह मुसलमानों से न जोड़ा जाये।

श्री लाल कृण आड्वाणी: आपने जो बात कही है, उसे मैंने नोटिस में ले लिया है। मैं बताना चाहता हूं कि गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति में बनातवाला जी भी सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि इस संस्था के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये और सारे देश के सामने हमने कहा कि इस समय यह मामला इन्वैस्टीगेशन स्टेज में है। इस इन्वैस्टीगेशन के पूरा होते ही कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में जहां ऐसी गतिविधियां हो रही हैं, उन राज्य सरकारों से कहा है कि वे कार्यवाही जरूर करें।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं उत्तर प्रदेश की घटनाओं का जिक्र नहीं करना चाहता लेकिन इसाइयों के संदर्भ में जिनका जिक्र किया गया है और मैं उनका उत्तर यहां दे चुका हूं। मुझे इस बात का अफसोस जरूर हुआ कि अगर माइनौरटीज कमीशन पांचों स्थानों पर जाता है, जहां उत्तर प्रदेश में घटनायें हुई हैं जहां बड़े बड़े बैनर्स छपे हैं, दुर्भाग्य की बात है कि अगर किसी कालेज में डकैती हो गई और डाकूओं ने हमला करके प्रिंसीपल की हत्या कर दी तो वह अखबार में प्रमुख हैडलाइन्स आती हैं:

The headline given is `Christian College Principal murdered'. If it were some other college Principal, it is all right. If it is murder of a Christian College Principal, then it is projected in a different way.

लेकिन इसाइयों पर अत्याचार हो रहे हैं और जब मानौरटीज कमीशन जांच करने जाता है तो पांच केसों में कैटोगोरीकली रिपोर्ट देता है और उसके बाद कहा जाता है कि यह हैंडमेड संस्था है। There were criticisms yesterday even of the Minorities Commission. I was surprised. It is a statutory body created by the Parliament. It is not a body created by the Executive. At one stage it was an Executive body. But subsequently, a law was enacted by the Parliament and this Minorities Commission has been set up under that law.

SHRI A.C. JOS (TRICHUR): There is no credibility. It might have been formed by the Parliament but its Members do not have any credibility.

SHRI L.K. ADVANI: I am sorry, this is not the way. That way, no Commission would have any credibility. We had set up Wadhwa Commission which came to the conclusion that Dara Singh has nothing to do with any Hindu organisation. Even Wadhwa Commission was criticised....(*Interruptions*) Shrimati Alva, you are not right. I have found out from the Report and that Report has been placed on the Table of the House along with the Action Taken Report....(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: If time permits, after the Minister's reply I will allow Members to seek clarifications.

SHRI G.M. BANATWALLA : The earlier Minority Commissions had pointed out clearly that there was an anti-Christian wave. They are also the Reports of the Commissions. It is only the Commission that has been reconstituted now, that has come forward with certain Report flying against the face of accepted facts, but earlier Reports of the Commissions are there. Why the Government does not refer to those earlier Reports of the Commission?

SHRI SATYAVRAT CHATURVEDI (KHAJURAHO): Dara Singh may or may not have to do anything with them....(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please hear him completely. Let the Home Minister complete his reply. Why do you not allow the Minister to complete his reply?

श्री लाल कृण आड्वाणी : श्री बनातवाला जी कहते हैं कि पहले जो उन्होंने कहा कि देश में एंटी क्रिश्चियन वेव है तो उसे आपने गलत कहा। इस कमीशन ने भले ही न कहा हो। केवल मात्र संगमा जी के कहन पर मैंने इस बात को स्वीकार किया कि सरकार की जवाबदारी होगी कि देश में जो ईसाई बसते हैं, उन ईसाईयों के मन से असुरक्षा का भाव निकाला जाए, यह सरकार का कर्त्तव्य होगा। अगर नहीं कर पाते हैं तो केवल मात्र स्टेटिस्टिक्स देकर हम किसी को संतुट नहीं कर सकते।â€¦(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions)**

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have already told that after the Minister's reply, if there is time, I will allow Members to seek clarifications.

श्री लाल कृण आड्वाणी : उपाध्यक्ष जी, मैं एन.डी.ए. का घोाणा पत्र कोट नहीं करता हूं, लेकिन उसमें स्पट रूप से कहा है कि हमारी सेक्युलरिज्म के प्रति प्रतिबद्धता है और देश में जितने अल्पसंख्यक है, उनका आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास करना हमारा कर्त्तव्य होगा। लेकिन मैं स्मरण कराना चाहूंगा कि कांस्टीटुएंट असेम्बली की डिबेट्स को देखा जाए, माइनोरिटीज के लिए सेफगार्ड्स प्रोवाइड करते हुए हमारे संविधान निर्माताओं का दृटिकोण क्या था। जिस समय

डाक्टर अम्बेडकर ने ड्राफ्ट कांस्टीट्यूशन पेश किया तो 23 नवम्बर, 1948 को भाषण देते हुए उन्होंने कहा -

> "In this country, both the minorities and the majority have followed a wrong path. It is wrong for the majority to deny the existence of minorities. It is equally wrong for the minorities to perpetuate themselves. A solution must be found which will serve a double purpose. It must recognise the existence of minorities to start with. It must also be such that it will enable majority and minorities to merge some day into one."

---

*Not Recorded.

उसी प्रकार की बात सरदार वल्लभभाई पटेल न की, जो माइनोरिटीज सब कमेटी के अध्यक्ष थे। उन्हें जो ड्राफ्ट दिया गया था, उसमें प्रोपोजल था कि सब सैक्शंस के लिए और रिजर्वेशन्स हों और उन्होंने वहां चर्चा करके यह निर्का निकाला, उन्होंने कहा कि हम रिजर्वेशन केवल मात्र शेड्यूल्ड कास्ट्स और शेड्यूल्ड ट्राइब्स को देंगे, बाकी का जो माइनोरिटीज का प्रावधान है कि सबको होगा रिजर्वेशन, वह उन्होंने काट दिया। They came with this Report to the Constituent Assembly और उसको रिपोर्ट देते हुए सरदार पटेल ने फिर से दोहराया :

> "In the long run it would be in the interest of all to forget that there is anything like the majority or the minority in this country and that in India there is only one community."

इतना ही नहीं, सरदार पटेल के इस प्रस्ताव पर जब पंडित नेहरू बोले तो

> "He described this proposal as a historic turn in our destiny. He said a safeguard of this kind would have some point where there was an autocratic foreign rule. It would enable the monarch to play one community up against the other. But where you are up against the full-blooded democracy, if you seek to give safeguards to a minority, you isolate it. Maybe, you protect it to a slight extent. But at what cost? At the cost of isolating it and keeping it away from the main current in which the majority is going. I am talking on the political plane, of course, at the cost of forfeiting that inner sympathy and fellow feeling with the majority. "

मैं इस बात का जिक्र इसलिए कर रहा हूं क्योंकि मैं समझता हूं कि हमको माइनॉरिटीज की चिन्ता पूरी करनी चाहिए और इस सरकार की भी जवाबदेही है। लेकिन हमको माइनॉरिटीज़ की चिन्ता करते हुए, माइनॉरिटिज़म को प्रमोट करते हुए माइनॉरिटीज़ एक वैस्टेड इंटरस्ट डैवलप करें अपने माइनॉरिटी होने में, यह स्थिति लाना कोई देश की एकता के लिए अच्छा नहीं होगा। मैं इस बात पर बल देना चाहूंगा और उस दृटि से डॉ.अंबेडकर, सरदार पटेल और पंडित नेहरू का जो दृटिकोण कांस्टीट्यूएंट असेम्बली में प्रकट हुआ, उसका मैं बहुत महत्व मानता हूं।

अंत में मैं इतना ही कहूंगा कि यह सवाल देश में हर नागरिक को सुरक्षा देने का है चाहे वह अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक। कोई एक प्रदेश में अल्पसंख्यक है तो कोई दूसरे प्रदेश में। जैसे आज कश्मीरी पंडित अल्पसंख्यक हैं कश्मीर में और उनकी चर्चा ध्यान में बहुत कम आती है। इतने लोग एक बार वहां से हटा दिये गये। â€¦ (व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (खजुराहो) : उसके लिए भी आप जिम्मेदार हैं।

श्री लाल कृण आड्वाणी : हम जिम्मेदार हैं। मैं कहता हूं कि हम सबकी चिन्ता करें, एक-एक नागरिक की चिन्ता करें। हम केवल उनकी चिन्ता ही न करें जिनके मन में असुरक्षा का भाव पैदा हो और वह असुरक्षा का भाव कोई सरकार नहीं देती, कोई पार्टी नहीं देती। यह एक प्रकार से अगर हमने सेक्यूलरिज़्म स्वीकार किया 1947 में तो क्यों स्वीकार किया और वह ऐसे समय में स्वीकार किया जब देश का विभाजन हुआ था और हिन्दू और मुसलमान के आधार पर हुआ था। पाकिस्तान ने अपने को मज़हबी राट्र घोति किया लेकिन भारत ने नहीं किया। उसका कारण यह है कि भारत अगर करता तो भारत अपनी संस्कृति और इतिहास के खिलाफ जाता। भारत ने सेक्यूलरिज़्म स्वीकार किया क्योंकि यह यहां की परंपरा, यहां का इतिहास, यहां की संस्कृति है। â€¦ (व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : I am glad that you are admitting this fact today after 50 years.

SHRI L.K. ADVANI: Shri Dasmunsi, I have been in Parliament for nearly 30 years now. If you were to go through my speeches 10 years' ago or 15 years' ago, you will find the same thing. I have written so much on this that in India anything apart from secularism not in the Western sense which has gradually become identified...(*Interruptions*). Over a period of time सेक्यूलरिज़्म का अर्थ हो गया इरिलीजियस स्टेट। Nothing to do with religion. That is not the concept. The concept from the very beginning has been that all religions are equal, all religions are to be respected, and the State shall not discriminate between one citizen and another on grounds of his religion.

यह जो परंपरा है यहां की , यह 1947 की नहीं है, यह तो शताब्दियों की है और हमेशा से यही परंपरा रही है। इसीलिए संविधान सभा ने जब देश को सेक्यूलर राज्य बनाया तो उन्होंने अपने इतिहास का आदर किया, अपनी परंपरा और संस्कृति का आदर किया। इसके अलावा राज्य कुछ और कर ही नहीं सकता। धन्यवाद।

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आपका यह निवेदन अगर 50 साल पहले नाथूराम गौड्से सुनता तो महात्मा गांधी की मौत नहीं होती।

SHRI SONTOSH MOHAN DEV : I participated in the debate. I am glad we have seen a changed-Advani and a changed pattern in this House. It is good. If you and your Government follow in reality whatever you have said just now, there will be some respite for the religious and linguistic minorities.

Mr. Home Minister, I raised certain points giving facts and figures, authenticated the notice of Quit India given to the citizens of India. I also drew your attention to the so called indigenous issue on which your Government had gone and discussed with an organisation called AASU without taking into confidence a party which has got 14 MPs from Assam.

May I get some reply from you?

SHRI L.K. ADVANI: I wish the law that presently governs Assam were the same as that governs the whole country. If it were the same that governs the whole country, I would be in a position to do something. As it is, it is principally the State Government which applies that law and not the Central Government. However, because you mentioned certain facts, I have already asked my Ministry to look into them.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : I would like to again go on record that the verdict on Mahatma Gandhi"s assassination case came today after fifty years. But you had praised Nathuram Ghodse at that time.

SHRI I.D. SWAMI: Please read some good books and some good speeches....(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There is a lot of noise in the House. Those Members who would like to go out may please do so quietly.

The House shall now take up the Private Members" Business. Dr. Laxminarayan Pandeya to continue his speech.